कथा सरिता

सौजन्य में महानता

आंधी को अपनी शक्ति पर बड़ा घमंड था। एक दिन चलते-चलते उसने अपनी छोटी बहन मंदवायु से कहा -`तुम भी क्या धीरे-धीरे बहती रहती हो! तुम्हारे चलने से एक पत्ता तक नहीं हिलता, जबकि मेरे प्रचंड वेग के आगे बड़े-बड़े वृक्ष धराशायी हो जाते हैं। जब मैं उठती हूँ तो दूर-दूर तक लोग मेरे आने की खबर चारो ओर फैला देते हैं। मुझे देखकर लोग खिड़की-दरवाज़े बंद कर अपने घरों में दुबक जाते हैं, पशु-पक्षी अपनी जान बचाकर इधर-उधर भागते फिरते हैं। मेरे प्रभाव से बस्तियां धूल में मिल जाती हैं। क्या तुम नहीं चाहती कि तुम्हारे भीतर भी मेरे समान शक्ति आ जाए?'

आंधी की ये बातें सुनकर मंदवायु हौले से मुस्कराई, मगर उसने कोई जवाब नहीं दिया। वह धीरे-धीरे अपनी यात्रा पर बढ़ चली। उसे आते देखकर नदियां, ताल, जंगल, खेत सभी मुस्कराने लगे। बगीचों में तरह-तरह के फूल खिल उठे। रंग-बिरंगे फूलों के गलीचे बिछ गए। वातावरण महक उठा। पक्षी कुंजों में आकर विहार करने लगे। ऐसा लग रहा था मानों पूरी प्रकृति अपनी बाहें पसारकर उस मंदवायु का स्वागत करने को आतुर हो। इस तरह अपने कार्यों द्वारा मंदवायु ने अपनी शक्ति का परिचय आंधी को आसानी से करा दिया।

यह देख आंधी बोली -`मैं ही गलत थी बहन। भले ही मेरा वेग और पराक्रम तुमसे अधिक हो, पर सकारात्मक प्रभाव तो तुम्हारा ही अधिक है। यही कारण है कि तुम्हारे आने से चारो ओर इतनी खुशियां फैल जाती हैं।' सज्जन व्यक्तियों का जीवनक्रम भी मंदवायु के समान चारो ओर सुरभि, सौंदर्य और प्रसन्नता फैलाने वाला होता है। वे पराक्रम में नहीं, अपने सौजन्य में महानता देखते हैं। यही कारण है कि वे हर जगह सम्मान पाते हैं।

मोह माया का पर्दा

एक नदी के किनारे एक महात्मा रहते थे। उनके पास दूर-दूर से लोग अपनी समस्याओं का समाधान पाने आते थे। एक बार एक व्यक्ति उनके पास आया और बोला,`महाराज! मैं लंबे समय से ईश्वर की भक्ति कर रहा हूँ, फिर भी मुझे ईश्वर के दर्शन नहीं होते। कृपया मुझे उनके दर्शन कराइए।' महात्मा बोले, `तुम्हें इस संसार में कौन सी चीज़ें सबसे अधिक प्रिय हैं?' व्यक्ति बोला, `महाराज! मुझे इस संसार में सबसे अधिक प्रिय अपना परिवार है और उसके बाद धन-दौलत।'

महात्मा ने पूछा, `क्या इस समय भी तुम्हारे पास कोई प्रिय वस्तु है?' व्यक्ति बोला, `मेरे पास एक सोने का सिक्का ही प्रिय वस्तु है।' महात्मा ने एक कागज़ पर कुछ लिखकर दिया और उससे पढ़ने को कहा। कागज़ देखकर व्यक्ति बोला, `महाराज! इस पर तो ईश्वर लिखा है।' महात्मा ने कहा, `अब अपना सोने का सिक्का इस कागज़ के ऊपर लिखे ईश्वर पर रख दो।' व्यक्ति ने ऐसा ही किया। फिर महात्मा बोले, `अब तुम्हें क्या दिखाई दे रहा है?' वह बोला, `इस समय तो मुझे इस कागज़ पर केवल सोने का सिक्का रखा दिखाई दे रहा है।'

महात्मा ने कहा, `ईश्वर का भी यही हाल है। वह हमारे सामने ही है, लेकिन मोह-माया के कारण हम उसके दर्शन नहीं कर पाते। जब हम उसे देखने की कोशिश करते हैं तो मोह-माया आगे आ जाती है। धन-सम्पत्ति, घर-परिवार के सामने ईश्वर को देखने का समय ही नहीं होता। यदि समय होता भी है तो, उस समय जब विपदा होती है। ऐसे में ईश्वर के दर्शन कैसे होंगे!' महात्मा की बातें सुनकर व्यक्ति समझ गया कि उसे मोह-माया से निकलना है।

अच्छाइयों पर दें ध्यान

एक बार की बात है, किसी राज्य में एक राजा था जिसकी केवल एक टाँग और एक आँख थी।

उस राज्य में सभी लोग खुशहाल थे क्यूंकि राजा बहुत बुद्धिमान और प्रतापी था।

एक बार राजा को विचार आया कि क्यों न खुद की एक तस्वीर बनवायी जाये।

फिर क्या था, देश-विदेशों से चित्रकारों को बुलवाया गया और एक से एक बड़े चित्रकार राजा के दरबार में आये।

राजा ने उन सभी से हाथ जोड़कर आग्रह किया कि वो उसकी एक बहुत सुंदर तस्वीर बनायें जो राजमहल में लगायी जायेगी।

सारे चित्रकार सोचने लगे कि राजा तो पहले से ही विकलांग है फिर उसी तस्वीर को बहुत सुंदर कैसे बनाया जा सकता है, ये तो संभव ही नहीं है और अगर तस्वीर सुंदर नहीं बनी तो राजा गुस्सा होकर दंड देगा। यही सोचकर सारे चित्रकारों ने राजा की तस्वीर बनाने से मना कर दिया।

तभी पीछे से एक चित्रकार ने अपना हाथ खड़ा किया और बोला कि मैं आपकी बहुत सुंदर तस्वीर बनाऊंगा जो आपको ज़रूर पसंद आयेगी। फिर चित्रकार जल्दी से राजा की आज्ञा लेकर तस्वीर बनाने में जुट गया।

काफी देर बाद उसने एक तस्वीर तैयार की जिसे देखकर राजा बहुत प्रसन्न हुआ और सारे चित्रकारों ने अपने दांतों तले उंगली दबा ली।

उस चित्रकार ने एक ऐसी तस्वीर बनायी जिसमें राजा एक टाँग को मोड़कर जमीन पर बैठा है और एक आँख बंद करके अपने शिकार पे निशाना लगा रहा है।

राजा ये देखकर बहुत प्रसन्न हुआ कि उस चित्रकार ने राजा की कमज़ोरियों को छिपा कर कितनी चतुराई से एक सुंदर तस्वीर बनाई है। राजा ने उसे खूब इनाम दिया।

तो, क्यों ना हम भी;दूसरों की कमियों को छुपाएं, उन्हें नज़रअंदाज़ करें और अच्छाइयों पर ध्यान दें।

इस कहानी से ये भी शिक्षा मिलती है कि कैसे हमें नकारात्मक परिस्थितियों में भी सकारात्मक सोचना चाहिए और किस तरह हमारी सकारात्मक सोच हमारी समस्याओं को हल करती है।

स्वस्थ एवं सुखी समाज... पेज 12 का शेष

स्व-परिवर्तन से समाज और फिर पूरे विश्व को परिवर्तित किया जा सकता है। यह गुण आध्यात्मिक ज्ञान एवं ईश्वरीय अनुभवों से प्राप्त किया जा सकता है। मीडिया प्रभाग के उपाध्यक्ष ब्र.कु. करुणा ने कहा कि दादी प्रकाशमणि के स्नेह से बंधे मीडियाकर्मियों ने ईश्वरीय संदेश और स्व-परिवर्तन से विश्व परिवर्तन का स्लोगन जन-जन तक पहुंचाने में अमूल्य योगदान दिया है। उन्होंने इस अवसर पर प्रभाग के अध्यक्ष ब्र.कु. ओमप्रकाश द्वारा भेजा गया संदेश पढ़कर सुनाया जिसमें कहा गया है कि हिंसा व अशांति से देश को मुक्त बनाने में मूल्यनिष्ठ मीडिया अहम भूमिका निभा सकता है।

प्रख्यात पत्रकार प्रो. कमल दीक्षित ने मुख्य वक्तव्य में कहा कि संविधानिक निकाय अपने-अपने स्तर पर भले ही कितने उपाए करते रहे लेकिन अभी भी समाज को स्वस्थ एवं सुखी बनाने का लक्ष्य प्राप्त नहीं हो पाया, परिवर्तन तो हुए लेकिन ज़्यादा समय टिक नहीं पाए। मुम्बई की लोकप्रिय टीवी एंकर सिमरण आहुजा ने श्री गुरुनानक देव की शिक्षाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि मनुष्य जन्म पाने वाले अत्यंत सौभाग्यशाली हैं लेकिन उन्हें अपना जीवन खुशनुमा बनाने के लिए क्रोध, कपट, लोभ और तनाव का परित्याग करके शांति और सद्भाव का प्रसार करना होगा। इसके लिए प्रेरणा ब्रह्माकुमारी संस्था से प्राप्त हो रही है। इंदौर से आए पत्रकारिता शिक्षाविद् एवं हास्य कवि डॉ. राजीव शर्मा ने कहा कि मूल्यनिष्ठ मीडिया स्वस्थ एवं सुखी समाज के निर्माण में सक्षम है।

जम्मू-बी.सी.रोड। माननीय निर्मल सिंह,डिप्युटी चीफ मिनिस्टर,जम्मू व कश्मीर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुदर्शन।

दिल्ली-ईस्ट पटेल नगर। जैन धर्म के प्रसिद्ध संत लोकेश मुनी को राखी बांधने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. रेनु, ब्र.कु. पूनम व ब्र.कु. जगदीश।

दिल्ली-रोहिणी सेक्टर 3। ए.सी.पी. सत्यपाल जी को राखी बांधने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. नीलम व ब्र.कु. ज्योति।

देवघर-वैद्यनाथ(झारखण्ड)। इंडियन ऑयल जसिदीह टर्मिनल में रक्षाबंधन कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में इंडियन ऑयल टर्मिनल प्रबंधक सुशील यादव, ब्र.क. रीता व कर्मचारीगण।

हरदोई-पिहानी चुंगी। पुलिस कप्तान उमेश कुमार सिंह को राखी बांधते हुए ब्र.कु. मालती।

नूह-मेवात(हरियाणा)। एम.एम. स्कूल के प्रिन्सीपल को राखी बांधते हुए ब्र.कु.मोनिका।